प्रारंभिक परीक्षा

सीफेयरर-फर्स्ट (SEAFARER-FIRST) पहल

संदर्भ

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) ने संघर्ष-प्रभावित होर्मुज जलडमरूमध्य, फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी में काम कर रहे भारतीय नाविकों की सुरक्षा के लिए 'सीफेयरर-फर्स्ट' (Seafarer-First) प्रतिक्रिया शुरू की।

सीफेयरर-फर्स्ट पहल के बारे में

- सीफेयरर-फर्स्ट पहल उच्च जोखिम वाले समुद्री क्षेत्रों में भारतीय नाविकों की सुरक्षा, कल्याण और वास्तविक समय (रियल-टाइम) की निगरानी सुनिश्चित करने के लिए एक समन्वित आपातकालीन प्रतिक्रिया तंत्र है।
- इसे MoPSW द्वारा विदेश मंत्रालय (MEA), भारतीय नौसेना, नौवहन महानिदेशालय और भारतीय मिशनों के समन्वय से लागू किया गया है।
- **मुख्य विशेषताएं**
    - एक समर्पित परिचालन डैशबोर्ड के माध्यम से भारतीय नाविकों की पोत-वार वास्तविक समय (रियल-टाइम) निगरानी।
    - प्रत्येक प्रभावित भारतीय नाविक के लिए समर्पित संपर्क अधिकारियों (liaison officers) की नियुक्ति।
    - संघर्ष-ग्रस्त जलक्षेत्र से गुजरने से पहले सभी जहाजों के लिए अनिवार्य खतरे का आकलन (threat assessment)।

ट्रांसपोज़ेबल एलिमेंट्स (JUMPING GENES)

संदर्भ

शोधकर्ताओं ने किसी जैविक वाहक (जैसे, वायरस) की सहायता के बिना एक जीव से दूसरे जीव में जाने वाले आरएनए-आधारित JUMPING GENES (इंट्रॉन) का पहला प्रत्यक्ष दृश्य प्रमाण प्रदान किया है, जो विभिन्न प्रजातियों के बीच क्षैतिज जीन स्थानांतरण (horizontal gene transfer - असंबंधित जीवों के बीच जीन का स्थानांतरण) को प्रदर्शित करता है।

ट्रांसपोज़ेबल एलिमेंट्स (JUMPING GENES) के बारे में

- JUMPING GENES डीएनए के वे खंड होते हैं जो जीनोम के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।
- **इन्हें निम्नलिखित में वर्गीकृत किया गया है:**
    - **वर्ग I (रेट्रोट्रांसपोज़न):** ये रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेज़ (Reverse Transcriptase) एंजाइम (जो आरएनए को डीएनए में परिवर्तित करता है) का उपयोग करके आरएनए मध्यवर्ती (अस्थायी आरएनए प्रति) के माध्यम से गति करते हैं।
    - **वर्ग II (डीएनए ट्रांसपोज़न):** ये ट्रांसपोज़ेज़ (Transposase) एंजाइम (जो डीएनए खंडों को काटता और सम्मिलित करता है) का उपयोग करके सीधे डीएनए के रूप में गति करते हैं।

- ये जीन अभिव्यक्ति को प्रभावित करते हैं, आनुवंशिक विविधता उत्पन्न करते हैं, और उत्परिवर्तन (mutations) का कारण बन सकते हैं।

अंतरिक्ष में एरिथ्रुलोज़ (ERYTHRULOSE) की खोज

संदर्भ

खगोलविदों ने आकाशगंगा (Milky Way) के केंद्र के पास एक अंतरतारकीय आणविक बादल (interstellar molecular cloud) में एक जटिल शर्करा (complex sugar), एरिथ्रुलोज़ का पता लगाया है, जो गहरे अंतरिक्ष में शर्करा अणु की पहली खोज है।

अंतरिक्ष में एरिथ्रुलोज़ की खोज के बारे में

- एरिथ्रुलोज़ एक जटिल शर्करा है जो जैविक रूप से महत्वपूर्ण अणुओं के लिए एक निर्माण खंड (building block) के रूप में कार्य करता है।
- यह तारों के बीच के अंतरिक्ष में सीधे तौर पर खोजा गया पहला शर्करा अणु है, जो यह प्रदर्शित करता है कि जटिल कार्बनिक यौगिक ग्रहीय वातावरण के बिना भी बन सकते हैं।
- यह खोज इस परिकल्पना का समर्थन करती है कि जीवन के कुछ रासायनिक अग्रदूत (precursors) अंतरिक्ष में उत्पन्न हुए होंगे और धूमकेतुओं (comets) तथा क्षुद्रग्रहों (asteroids) द्वारा पृथ्वी पर लाए गए होंगे।

प्रोटीन बायोसेंसर (PROTEIN BIOSENSORS)

संदर्भ

प्रोटीन बायोसेंसर में हाल की प्रगति ने रोग-संबंधी प्रोटीनों का तेजी से पता लगाने में सक्षम बनाया है, जो सेप्सिस (sepsis), कैंसर, मलेरिया और कोविड-19 जैसी स्थितियों के लिए वास्तविक समय (real-time) निदान की पेशकश करता है।

प्रोटीन बायोसेंसर के बारे में

- **प्रोटीन बायोसेंसर ऐसे विश्लेषणात्मक उपकरण हैं जो जैविक पहचान तत्व (biological recognition element) (जैसे, एंटीबॉडी या एप्टामर्स) को सिग्नल-परिवर्तित करने वाले ट्रांसड्यूसर (transducer) के साथ जोड़कर विशिष्ट प्रोटीन (बायोमार्कर) का पता लगाते हैं।**
- ये अत्यधिक विशिष्ट प्रोटीन पहचान के लिए एप्टामर्स (aptamers) या एंटीबॉडी (antibodies) का उपयोग करते हैं।

एप्टामर्स (Aptamers)

- छोटे एकल-रज्जुक (single-stranded) डीएनए या आरएनए अणु जो विशिष्ट रूप से लक्ष्य अणुओं, जैसे प्रोटीन, से जुड़ते हैं।
- ये एंटीबॉडी की तुलना में अधिक स्थिर, लागत प्रभावी और संश्लेषित (synthesise) करने में आसान होते हैं, जो इन्हें उन्नत बायोसेंसर के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

सेवा उत्पादन सूचकांक (INDEX OF SERVICES PRODUCTION - ISP)

संदर्भ

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने प्रायोगिक आधार पर पहला परीक्षण सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP) जारी किया है, जो औपचारिक सेवा क्षेत्र के प्रदर्शन को मापने के लिए भारत का पहला आधिकारिक मासिक संकेतक (monthly indicator) पेश करता है।

सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP) के बारे में

- **सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP) एक मासिक सूचकांक है जो औपचारिक सेवा क्षेत्र के उत्पादन में होने वाले परिवर्तनों को मापता है।**
- यह औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के समकक्ष सेवा-क्षेत्र का सूचकांक है और इसे व्यवसायों पर कोई अतिरिक्त रिपोर्टिंग बोझ डाले बिना, जीएसटी, प्रशासनिक और वार्षिक उद्यम सर्वेक्षण डेटा का उपयोग करके MoSPI द्वारा संकलित किया जाता है।
- **आधार वर्ष:** 2024–25।
- 19 औपचारिक सेवा उप-क्षेत्रों को कवर करता है, जो भारत के सेवा क्षेत्र का लगभग 60% हिस्सा हैं।
- यह सेवा उत्पादन में परिवर्तन को मापता है और यह सकल मूल्य वर्धित (Gross Value Added - GVA) का माप नहीं है।
- **डेटा स्रोत (Data Sources):**
    - अधिकांश सेवा क्षेत्रों के लिए जीएसटी (GST) डेटा।
    - रेलवे परिवहन, हवाई परिवहन, जल परिवहन (माल ढुलाई), बैंकिंग और बीमा के लिए प्रशासनिक डेटा।
    - क्षेत्रीय भारांक (sectoral weights) निर्दिष्ट करने के लिए निगमित सेवा क्षेत्र उद्यमों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASISSE)।
    - वास्तविक उत्पादन (real output) का अनुमान लगाने के लिए थोक मूल्य सूचकांक (WPI) और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) का डिफ्लेटर (deflators) के रूप में उपयोग करता है।
- **बहिष्करण (Exclusions)**
    - इसमें मुख्य सरकारी गतिविधियों जैसे लोक प्रशासन (public administration), रक्षा और भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) को शामिल नहीं किया गया है।
    - इसमें गैर-बाजार गतिविधियों और अनौपचारिक क्षेत्र (informal sector) को शामिल नहीं किया गया है।
    - स्वास्थ्य, शिक्षा और आवासों का स्वामित्व वर्तमान में कवर नहीं किए गए हैं और भविष्य में इन्हें शामिल करने का प्रस्ताव है, जिससे कवरेज बढ़कर सेवा क्षेत्र का लगभग 80% हो जाएगा।

ग्रेटर सैंड प्लोवर (GREATER SAND PLOVER)

संदर्भ

हाल ही में चंदू गांव में एक ग्रेटर सैंड प्लोवर देखा गया, जो इस क्षेत्र में प्रवासी तटपक्षी (migratory shorebird) का पांचवां प्रलेखित (documented) रिकॉर्ड है।

ग्रेटर सैंड प्लोवर के बारे में

- ग्रेटर सैंड प्लोवर एक प्रवासी तटपक्षी है।
- यह मध्य एशिया और उत्तरी चीन में उच्च-ऊंचाई वाले शुष्क और खुले आवासों में प्रजनन करता है, और सर्दियों के दौरान अफ्रीका, मध्य पूर्व, भारतीय उपमहाद्वीप, दक्षिण पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलेशिया में तटीय मडफ्लैट्स (mudflats) और मुहानों (estuaries) में प्रवास करता है।
- **IUCN रेड लिस्ट:** कम चिंता वाली श्रेणी (Least Concern - LC)
- **WPA (वन्यजीव संरक्षण अधिनियम):** अनुसूची II

वाल्मीकि टाइगर रिजर्व (VALMIKI TIGER RESERVE)

संदर्भ

बिहार में वाल्मीकि टाइगर रिजर्व (VTR) राज्य के सबसे समृद्ध सरीसृप (reptile) आवासों में से एक के रूप में उभरा है, जिसके जंगलों में सांपों की 45 से अधिक प्रजातियां दर्ज की गई हैं।

वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के बारे में

- **वाल्मीकि टाइगर रिजर्व (VTR) भारत-नेपाल सीमा के साथ पश्चिम चंपारण जिले, बिहार में स्थित है, और यह राज्य का एकमात्र टाइगर रिजर्व है।**
- यह भारत में हिमालयी तराई के जंगलों की सबसे पूर्वी सीमा बनाता है, जिसमें भाबर (Bhabar) और तराई (Terai) परिदृश्य शामिल हैं।
- इसके उत्तर में चितवन राष्ट्रीय उद्यान (नेपाल) और पश्चिम में गंडक नदी की सीमा लगती है।
- रिजर्व से बहने वाली प्रमुख नदियों में गंडक, पंडई, मनोर, हरहा, मसान और भपसा शामिल हैं।
- वनस्पतियों में साल (Sal) के प्रभुत्व वाले उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन (tropical moist deciduous forests), नदीय वन, घास के मैदान और सवाना शामिल हैं, साथ ही सागौन, बांस, सेमल और खैर भी पाए जाते हैं।
- यह बाघ, तेंदुआ, फिशिंग कैट, लेपर्ड कैट, गौर, स्लॉथ बीयर, सांभर, हॉग डियर, चित्तीदार हिरण, ब्लैकबक (काला हिरण), लंगूर और रीसस मकाक जैसे विविध वन्यजीवों का समर्थन करता है।

इंडियन ग्रे हॉर्नबिल (INDIAN GREY HORNBILL)

संदर्भ

इंडियन ग्रे हॉर्नबिल को छह दशकों से अधिक की अनुपस्थिति के बाद गुजरात के गिर जंगलों में दर्ज किया गया है, जो एक महत्वपूर्ण संरक्षण मील का पत्थर (conservation milestone) है।

इंडियन ग्रे हॉर्नबिल के बारे में

- **इंडियन ग्रे हॉर्नबिल भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली एक उष्णकटिबंधीय, वृक्षवासी (arboreal) पक्षी प्रजाति है।**
- यह पर्णपाती जंगलों, खुले वुडलैंड्स, कांटेदार जंगलों, ग्रामीण परिदृश्यों और शहरी पार्कों में निवास करता है, और आमतौर पर जोड़ों (pairs) में देखा जाता है।
- **मुख्य रूप से फलाहारी (frugivorous) (मुख्य रूप से फलों पर भोजन करने वाला):** यह कीड़ों और छोटे कशेरुकियों (vertebrates) के साथ-साथ मुख्य रूप से अंजीर खाता है।
- यह अपनी तेज चीखने वाली आवाज़ों (loud squealing calls) और सामाजिक व्यवहारों जैसे बिल-ग्रैपलिंग (bill-grappling) और हवाई प्रदर्शनों के लिए जाना जाता है।
- यह एक महत्वपूर्ण बीज प्रकीर्णक (seed disperser) के रूप में एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिका निभाता है, जो वन पुनर्जनन (forest regeneration) में सहायता करता है और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बनाए रखता है।
- **IUCN रेड लिस्ट:** कम चिंता वाली श्रेणी (Least Concern - LC)।
- **WPA (वन्यजीव संरक्षण अधिनियम):** अनुसूची II

मुख्य परीक्षा

भारत में शहरी रोजगार: महानगरीय विकास की पुनर्कल्पना

संदर्भ

हाल ही के PLFS 2025 और ASUSE 2025 के आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत के दस लाख से अधिक आबादी वाले शहर (million-plus cities) औपचारिक रोजगार, उच्च वेतन, उद्यम विकास और उत्पादकता के प्रमुख केंद्रों के रूप में उभर रहे हैं, जो देश के शहरी श्रम बाजार को नया आकार दे रहे हैं।

भारतीय शहर रोजगार-नेतृत्व वाले विकास (Employment-Led Growth) को कैसे गति दे रहे हैं?

- **समूहन अर्थव्यवस्थाएं (Agglomeration Economies) और उत्पादकता लाभ:** फर्मों, कुशल श्रम और सहायक उद्योगों का संकेंद्रण पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं (economies of scale), ज्ञान के प्रसार (knowledge spillovers) और नवाचार का निर्माण करता है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और रोजगार के अवसरों का विस्तार होता है।
    - **उदाहरण के लिए:** ASUSE 2025 दर्शाता है कि 46 दस लाख से अधिक आबादी वाले शहर सकल मूल्य वर्धित (Gross Value Added - GVA) में 21% का योगदान करते हैं, जबकि गैर-निगमित (unincorporated) प्रतिष्ठानों में उनकी हिस्सेदारी केवल 13% है, जो उच्च उत्पादकता को दर्शाता है।
- **विविध शहरी श्रम बाजारों का विस्तार:** शहर संगठित उद्योगों, आधुनिक सेवाओं और अनौपचारिक शहरी उद्यमों में रोजगार का समर्थन करते हैं, जिससे विविध कौशल स्तरों वाले श्रमिकों का श्रम अवशोषण (labour absorption) सक्षम होता है।
    - **उदाहरण के लिए:** दस लाख से अधिक आबादी वाले शहरों में आधे से अधिक कार्यबल नियमित वेतन या वैतनिक रोजगार में लगे हैं, जबकि शहरी लॉजिस्टिक्स, प्लेटफॉर्म वर्क और स्थानीय सेवाएं बड़े कार्यबल को अवशोषित करना जारी रखती हैं।
- **उद्यम क्लस्टरिंग (Enterprise Clustering) और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र:** सघन व्यापार नेटवर्क, स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और संस्थागत जुड़ाव (institutional linkages) उद्यमिता, नवाचार और व्यापार विस्तार को बढ़ावा देते हैं, जिससे रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं।
    - **उदाहरण के लिए:** बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और गुरुग्राम स्टार्टअप्स, ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (GCCs) और ज्ञान-गहन (knowledge-intensive) उद्योगों के अग्रणी हब के रूप में उभरे हैं।
- **महिला जनसांख्यिकीय लाभांश (Female Demographic Dividend) का दोहन:** शहर महिलाओं के लिए शिक्षा, औपचारिक रोजगार और सेवा-क्षेत्र की नौकरियों तक पहुंच का विस्तार करते हैं, जिससे मानव पूंजी का अधिक उपयोग सक्षम होता है और श्रम बल का विस्तार होता है।
    - **उदाहरण के लिए:** दस लाख से अधिक आबादी वाले शहरों में महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 19.8% (2017-18) से बढ़कर 27.2% (2025) हो गई।

- **उपभोग-संचालित रोजगार गुणक (Consumption-Driven Employment Multipliers):** बड़ी शहरी आबादी आवास, खुदरा, लॉजिस्टिक्स, स्वास्थ्य सेवा और आतिथ्य (hospitality) के लिए निरंतर मांग उत्पन्न करती है, जो कई श्रम-गहन (labour-intensive) क्षेत्रों में रोजगार को प्रोत्साहित करती है।
    - **उदाहरण के लिए:** शहरी आवास और बुनियादी ढांचे की मांग से संचालित निर्माण क्षेत्र भारत का दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है, जबकि व्यापार, होटल और परिवहन सबसे बड़े शहरी रोजगार जनरेटरों में बने हुए हैं।

महानगरीय-नेतृत्व वाले रोजगार विकास के सामाजिक-आर्थिक निहितार्थ क्या हैं?

सामाजिक निहितार्थ

- **ग्रामीण-शहरी प्रवासन (Rural-Urban Migration) और श्रम गतिशीलता को तेज करता है:** महानगरों में रोजगार के बढ़ते अवसर ग्रामीण और छोटे शहरी क्षेत्रों से श्रमिकों को आकर्षित करते हैं, जिससे श्रम गतिशीलता और संरचनात्मक परिवर्तन (structural transformation) को सुविधा मिलती है। हालांकि, इस प्रवासन का एक बड़ा हिस्सा चक्रीय (circular) बना हुआ है, जो लगातार आजीविका की असुरक्षा और मौसमी रोजगार पैटर्न को दर्शाता है।
    - **उदाहरण के लिए:** 2011 की जनगणना रोजगार को ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन के एक प्रमुख चालक के रूप में पहचानती है, जबकि हाल के PLFS रुझान बढ़ते चक्रीय प्रवासन (circular migration) का संकेत देते हैं।
- **महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाता है:** शिक्षा, औपचारिक रोजगार और आधुनिक कार्यस्थलों तक अधिक पहुंच महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता, निर्णय लेने की शक्ति और श्रम-बल भागीदारी में सुधार करती है, साथ ही पारंपरिक व्यावसायिक और सामाजिक बाधाओं को धीरे-धीरे कमजोर करती है।
    - **उदाहरण के लिए:** PLFS 2025 के अनुसार, दस लाख से अधिक आबादी वाले शहरों में महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 19.8% (2017-18) से बढ़कर 27.2% (2025) हो गई है।
- **स्थानिक असमानता (Spatial Inequality) और सामाजिक स्तरीकरण को गहरा करता है:** रोजगार का तीव्र संकेंद्रण अक्सर किफायती आवास और शहरी बुनियादी ढांचे की गति को पार कर जाता है, जिससे मलिन बस्तियां (slums), अनौपचारिक बस्तियां और सार्वजनिक सेवाओं तक असमान पहुंच बनती है, जिससे सामाजिक-स्थानिक असमानताएं सुदृढ़ होती हैं।
    - **उदाहरण के लिए:** भारत में शहरी नियोजन क्षमता पर नीति आयोग की रिपोर्ट (2021) भारतीय शहरों में शहरी नियोजन और बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण कमी को उजागर करती है।

आर्थिक निहितार्थ

- **शहरी उपभोग और रोजगार गुणकों का विस्तार करता है:** महानगरीय रोजगार औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों में आय बढ़ाता है, जिससे आवास, खुदरा, स्वास्थ्य सेवा, लॉजिस्टिक्स, आतिथ्य और डिजिटल सेवाओं की मांग पैदा होती है, जिससे शहरी अर्थव्यवस्था में गुणक प्रभाव (multiplier effects) पैदा होते हैं।
    - **उदाहरण के लिए:** आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 घरेलू उपभोग को भारत के आर्थिक विकास के प्रमुख चालक के रूप में पहचानता है, जबकि महानगरीय मांग खुदरा व्यापार, परिवहन और आतिथ्य में रोजगार को बनाए रखती है।

- **क्षेत्रीय आर्थिक विचलन (Regional Economic Divergence) को गहरा करता है:** महानगरीय केंद्रों में निवेश, उद्यमों और गुणवत्तापूर्ण रोजगार का संकेंद्रण छोटे शहरों और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों के साथ असमानताओं को चौड़ा करता है, जिससे असमान क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलता है।
    - **उदाहरण के लिए:** दिल्ली, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और सूरत में निवेश, उद्यमों और उच्च-मूल्य वाले रोजगार का असंगत हिस्सा आकर्षित होना जारी है।
- **निरंतर अनौपचारिकीकरण (Persistent Informalisation) के साथ संरचनात्मक परिवर्तन को तेज करता है:** महानगरीय रोजगार कम उत्पादकता वाले कृषि क्षेत्र से विनिर्माण और सेवाओं की ओर श्रम की आवाजाही को सुगम बनाता है। हालांकि, श्रमिकों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कम उत्पादकता वाले अनौपचारिक और गिग रोजगार (gig employment) में प्रवेश करना जारी रखता है, जो गुणवत्तापूर्ण रोजगार सृजन की गति को सीमित करता है।
    - **उदाहरण के लिए:** जबकि लुईस का दोहरे क्षेत्र का मॉडल (Lewis Dual Sector Model) औपचारिक उद्योग में श्रम के स्थानांतरण की परिकल्पना करता है, भारत का शहरी संक्रमण काफी हद तक निर्माण, अनौपचारिक सेवाओं और प्लेटफॉर्म-आधारित रोजगार के विस्तार की विशेषता रहा है।

शहरी रोजगार ग्रामीण परिवर्तन (Rural Transformation) को कैसे उत्प्रेरित कर सकता है?

- **प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment) को कम करता है और संरचनात्मक परिवर्तन को तेज करता है:** शहरी रोजगार अधिशेष ग्रामीण श्रम को अवशोषित करता है, कम उत्पादकता वाली कृषि से उच्च-उत्पादकता वाले विनिर्माण और सेवाओं में बदलाव को सुगम बनाता है, जिससे समग्र आर्थिक दक्षता में सुधार होता है।
    - **उदाहरण के लिए:** लुईस का दोहरे क्षेत्र का मॉडल बताता है कि पारंपरिक कृषि से आधुनिक शहरी क्षेत्रों में श्रम प्रवासन संरचनात्मक परिवर्तन को कैसे संचालित करता है।
- **प्रेषण (Remittances) के माध्यम से ग्रामीण घरेलू आय को मजबूत करता है:** शहरी श्रमिक अपनी कमाई का एक हिस्सा ग्रामीण परिवारों को हस्तांतरित करते हैं, जो कृषि यंत्रीकरण (farm mechanisation), सिंचाई और ग्रामीण उद्यमों में खपत, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और उत्पादक निवेश का समर्थन करता है, जिससे गरीबी कम होती है और ग्रामीण पूंजी निर्माण मजबूत होता है।
    - **उदाहरण के लिए:** आरबीआई के अध्ययन प्रवासी प्रेषण को ग्रामीण परिवारों, विशेषकर बिहार, उत्तर प्रदेश और ओडिशा में आय के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में पहचानते हैं।
- **ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार (Rural Non-Farm Employment) का विस्तार करता है:** बढ़ती शहरी मांग ग्रामीण उद्योगों जैसे निर्माण सामग्री, ग्रामीण एमएसएमई (MSME), हस्तशिल्प, लॉजिस्टिक्स और व्यावसायिक सेवाओं को प्रोत्साहित करती है, जिससे कृषि से परे आजीविका के विविध अवसर पैदा होते हैं।
    - **उदाहरण के लिए:** तेजी से शहरी निर्माण ने ईंट भट्ठों, पत्थर की खदानों और ग्रामीण निर्माण-सामग्री उद्यमों में रोजगार को बढ़ावा दिया है, जबकि PMEGP ग्रामीण विनिर्माण और सूक्ष्म उद्यमों का समर्थन करता है।
- **कृषि के महिलाकरण (Feminisation of Agriculture) के माध्यम से ग्रामीण लैंगिक भूमिकाओं को बदलता है:** महानगरीय केंद्रों में पुरुष श्रमिकों का प्रवासन तेजी से कृषि प्रबंधन और घरेलू निर्णय लेने की क्षमता महिलाओं के हाथों

में स्थानांतरित कर देता है, जिससे भूमि अधिकारों, संस्थागत ऋण और लिंग-उत्तरदायी (gender-responsive) कृषि यंत्रीकरण के माध्यम से अधिक संस्थागत समर्थन की आवश्यकता होती है।

- **उदाहरण के लिए:** कृषि जनगणना 2015-16 दर्शाती है कि परिचालन जोत (operational landholders) में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 30% है और कृषि कार्यबल में 40% से अधिक है—यह प्रवृत्ति हाल के PLFS निष्कर्षों द्वारा और मजबूत हुई है जो कृषि में बढ़ती महिला भागीदारी का संकेत देते हैं।

- **ग्रामीण उत्पादकों को शहरी मूल्य श्रृंखलाओं (Urban Value Chains) के साथ एकीकृत करता है:** शहरी बाजारों का विस्तार कृषि उपज और ग्रामीण उत्पादों के लिए निरंतर मांग पैदा करता है, मूल्यवर्धन (value addition), बाजार एकीकरण और उच्च कृषि आय को प्रोत्साहित करता है।
  - **उदाहरण के लिए:** ई-नाम (e-NAM) और ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) किसानों, एफपीओ (FPOs) और ग्रामीण उद्यमों को शहरी उपभोक्ताओं से जोड़ते हैं, जिससे बाजार मध्यस्थता (market intermediation) कम होती है और मूल्य प्राप्ति में सुधार होता है।

भारत समावेशी और रोजगार-केंद्रित शहरों का निर्माण कैसे कर सकता है?

- **महानगरीय शासन और नगर निगम के वित्त को मजबूत करना:** 74वें संविधान संशोधन के तहत महानगरीय योजना समितियों (MPCs) और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को स्थानिक और आर्थिक नियोजन को एकीकृत करने के लिए सशक्त बनाएं, जिसे राजकोषीय हस्तांतरण, संपत्ति कर सुधारों और म्युनिसिपल बॉन्ड फाइनेंसिंग द्वारा समर्थित किया जाए।
  - **उदाहरण के लिए:** भारत में शहरी नियोजन क्षमता पर नीति आयोग की रिपोर्ट (2021) महानगरीय शासन को मजबूत करने की सिफारिश करती है, जबकि इंदौर, पुणे और अहमदाबाद ने म्युनिसिपल बॉन्ड के माध्यम से सफलतापूर्वक पूंजी जुटाई है।

- **परि-शहरी (Peri-Urban) विनिर्माण और एमएसएमई (MSME) क्लस्टर विकसित करना:** महानगरीय कोर (metropolitan cores) को भीड़भाड़ से मुक्त करते हुए बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने के लिए कम भूमि लागत और एकीकृत लॉजिस्टिक्स का लाभ उठाते हुए, परि-शहरी औद्योगिक गलियारों और एमएसएमई क्लस्टर के माध्यम से श्रम-गहन उद्योगों को बढ़ावा दें।
  - **उदाहरण के लिए:** राष्ट्रीय औद्योगिक कॉरिडोर विकास कार्यक्रम (NICDP) और पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (PM Gati Shakti National Master Plan) प्रमुख महानगरीय केंद्रों से परे एकीकृत औद्योगिक और लॉजिस्टिक्स पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करते हैं।

- **अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को शहरी नियोजन में एकीकृत करना:** अनौपचारिक क्षेत्र को विनियमित करने से लेकर इसे निर्दिष्ट वेंडिंग ज़ोन, सामाजिक सुरक्षा, किफायती ऋण और जलवायु-अनुकूल (climate-resilient) सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से सक्षम बनाने की ओर संक्रमण करें, जिससे कमजोर शहरी श्रमिकों के लिए समावेशी आजीविका सुनिश्चित हो सके।
  - **उदाहरण के लिए:** स्ट्रीट वेंडर्स (आजीविका का संरक्षण और स्ट्रीट वेंडिंग का विनियमन) अधिनियम, 2014, पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi), और सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 (Code on Social Security, 2020) स्ट्रीट वेंडर्स और गिग श्रमिकों (gig workers) के लिए आजीविका सुरक्षा को मजबूत करते हैं।

- **समावेशी कौशल पारिस्थितिकी तंत्र (Inclusive Skill Ecosystems) को मजबूत करना:** अनौपचारिक श्रमिकों को प्रमाणित करने के लिए 'पूर्व शिक्षा की मान्यता' (Recognition of Prior Learning - RPL) को संस्थागत बनाते हुए उद्योग-आधारित कौशल का विस्तार करें, जिससे शहरी क्षेत्रों में रोजगार क्षमता, उत्पादकता और श्रम गतिशीलता में सुधार हो सके।
    - **उदाहरण के लिए:** स्किल इंडिया मिशन के तहत, 'पूर्व शिक्षा की मान्यता' (RPL) निर्माण श्रमिकों, इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर और अन्य अनौपचारिक श्रमिकों के मौजूदा कौशल को प्रमाणित करती है।
- **किफायती आवास और पारगमन-उन्मुख विकास (Transit-Oriented Development - TOD) को बढ़ावा देना:** आने-जाने (commuting) की लागत को कम करने, श्रम गतिशीलता में सुधार करने और रोजगार के अवसरों तक समान पहुंच बढ़ाने के लिए किफायती आवास, एकीकृत सार्वजनिक परिवहन और पारगमन-उन्मुख विकास का विस्तार करें।
    - **उदाहरण के लिए:** पीएमएवाई (शहरी) (PMAY - Urban) और मेट्रो रेल नीति, 2017 पारगमन-उन्मुख विकास (TOD) के माध्यम से एकीकृत आवास और गतिशीलता को बढ़ावा देते हैं।
- **संतुलित क्षेत्रीय शहरीकरण (Balanced Regional Urbanisation) को बढ़ावा देना:** गुणवत्तापूर्ण शहरी बुनियादी ढांचे, स्थानीय उद्यम विकास और विविध रोजगार के अवसरों के माध्यम से टियर-II और टियर-III शहरों को मजबूत करें, जिससे महानगरीय केंद्रों पर अत्यधिक प्रवासन के दबाव को कम किया जा सके।
    - **उदाहरण के लिए:** अमृत 2.0 (AMRUT 2.0) शहरी बुनियादी ढांचे और सेवा वितरण में सुधार करता है, जबकि एक जिला एक उत्पाद (ODOP) पहल क्षेत्र-विशिष्ट उद्यमों और स्थानीय रोजगार पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देती है।